Springboard ACADEMY

RAS Mains 2018 Notes

विश्व इतिहास + समाज शास्त्र + नीतिशास्त्र + मनोविज्ञान

राजस्थान सिविल सेवा परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण नोट्स

(RPSC के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार)

AN INSTITUTE FOR IAS & RAS
Plot A-1, Keshav Vihar, Riddhi Siddhi Chouraha, Gopalpura Bye Pass Jaipur
M.No. : 9636977490, 8955577492, Website : www.springboardindia.org

INDEX – Mains 1

Topic	Page
विश्व का इतिहास	1 - 83
1 पुनर्जागरण	1
2 धर्म सुधार आंदोलन	6
3 औद्योगिक क्रान्ति	12
4 अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम	16
5 फ्रांसीसी क्रान्ति	23
6 नेपोलियन बोनापार्ट	35
7 उपनिवेषवाद और साम्राज्यवाद	45
8 अफ्रीका का बंटवारा	49
10 प्रथम विश्व युद्ध	51
11 रूस की क्रांति	63
12 आर्थिक मंदी (1929–30)	73
14 द्वितीय विश्व युद्ध	78
सोसोलॉजी / Sociology	84 - 94
1 वर्ण व्यवस्था	84
2 आश्रम व्यवस्था	85
3 संस्कार	87
5 जाति	88
6 वर्ग	90
7 संस्कृतिकरण	92
8 सामाजिक मूल्य	93
9 पंथ निरपेक्षता	93
नीतिशास्त्र / Ethics	95 - 120
1 परिचय	95
2 सुकरात का सद्‌गुण संबंधी मत	99
3 प्लेटो का न्याय सिद्धांत	100
4 बेंथम और मिल का उपयोगितावाद	102
5 काण्ट का नैतिक सिद्धांत	106
6 नैतिकता की पूर्व मान्यताएं	107
7 संकल्प स्वातंत्रय व नियतिवाद	108
8 भगवद् गीता	110
9 पुरूषार्थ	111
10 नीतिशास्त्र के आयाम	115
Psychology	121 - 148
1 बुद्धि Intelligence	122
2 व्यक्तित्व (Personality)	125
3 अधिगम (Learning)	136
4 स्मृति के मॉडल	137
5 विस्मृति के कारण	140
6 मेस्लो का आवश्यकता पदानुक्रम	142
7 कुंठा एवं द्वन्द्व	143
8 जीवन की चुनौतियों का सामना करना	145

Springboard ACADEMY

पुनर्जागरण (Renaissance)

अर्थ–13 वीं से 16 वीं शताब्दी के मध्य यूरोप में यूनानी एवं रोमन सभ्यता से प्रेरणा लेकर विचारों, साहित्य व कला के क्षेत्र में मानव केन्द्रित प्रवृत्तियों से युक्त बौद्धिक आंदोलन को पुनर्जागरण कहते है।

प्रकृति

पुनर्जागरण के कारण

पुनर्जागरण के प्रभाव/परिणाम

इटली में ही पुनर्जागरण का आरंभ क्यों ?

प्रकृति – 1. प्राचीन यूनान व रोम की सभ्यताओं से प्रेरित।

2. अतीत से प्रेरित होने के बावजूद पूर्णरूपेण प्रतिगामी नहीं थी, यह प्रगतिशील थी।

3. जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करने के बावजूद कला व साहित्य के क्षेत्र में विशेष रूप से प्रभावित।

4. धर्म निरपेक्षता के तत्वों से युक्त। धर्म के प्रति सम्मान रखते हुए इसने धर्मेत्तर प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दिया और इहलौकिक पर बल दिया।

5. शहरों से आरंभ होने के कारण इसका स्वरूप भी शहरीकरण था।

6. मानववादी विचारों से प्रेरित थी। इसमें सभी विचारों का केन्द्र मानव को समझा जाता है। मनुष्य दुनिया के स्वामी के रूप में प्रतिष्ठित।

7. यह रूढ़िवादिता व अंधविष्वासों के विपरीत था। इसमें तार्किकता को महत्व दिया गया था।

8. स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहन।

पुनर्जागरण के कारण –

1. धर्मयुद्ध –11वीं से 19 वीं शताब्दी के अंत तक यूरोप में लड़े गये युद्ध जो ईसाई धर्म के पवित्र स्थल जेरूसलम (इजरायल) को लेकर मुसलमानों (सैल्जुक तुर्को) के बीच हुए, को धर्म युद्ध (कूसेड) की संज्ञा दी गई है। इस दौरान यूरोपीय अरब देशों में पहुँचे तथा वापसी में अपने साथ अनेक प्रकार के अनुभव लेकर गये।

2. आर्थिक कारण –उत्पादन में वृद्धि हो रही थी।

व्यावसायिक वर्गो का उदय।

व्यापार–वाणिज्य में वृद्धि।

नगरों का विकास।

धनिक वर्ग का उदय – कला को संरक्षण, कला के क्षेत्र में विकास । व्यापारियों द्वारा अलग–अलग देशों में जाने पर परपरागत मान्यताओं का अंत।

3. कुस्तुनतुनिया पर तुर्को का अधिकार – 1453 ई. में तुर्को ने पूर्वी रोमन (बाइजेन्टाइन) साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया पर अधिकार कर लिया। यहाँ यूनानी व रोमन सभ्यताओं के अवशेष सुरक्षित थे। तुर्की आक्रमणकारियों के अत्याचारों से बचने के लिए यहां के दार्शनिक, विद्वान एवं कलाकार यूरोप की तरफ पलायन कर गये तथा प्राचीन यूनान व रोम का ज्ञान–विज्ञान तथा नयी चिंतन पद्धति अपने साथ ले गये।

अकेला कार्टिनल बेसारिओन 800 पाण्डुलिपियों के साथ इटली पहुँचा। यूरोप के युवावर्ग को नवीन चिंतन तथा ज्ञान की खोज की प्रेरणा।

1492 – कोलम्बस ने नई दुनिया की खोज, 1498 – वास्कोडिगामा कालीकट पहुंचा।

4. महान मंगोल साम्राज्य– 13 वीं शताब्दी में कुबुलाई खाँ ने विषाल साम्राज्य की स्थापना की। इसका साम्राज्य रूस, हंगरी व पौलेण्ड तक विस्तृत था। इटली का यात्री मार्कोपोलो (1272 ई.) कुबुलाई खाँ के दरबार में आया था। जो कुबुलाई खाँ के दरबार की भव्यता एवं संस्कृति से प्रभावित हुआ। अपने यात्रा वृतांत में उसकी प्रशंसा की यूरोपीय लोगों के सम्मुख अरब देशों की सम्पन्नता को प्रस्तुत किया।

5. नये आविष्कार –1. जर्मनी का गुटेनबर्ग जिसने छापेखाने का आविष्कार किया। इससे साहित्य का प्रचार–प्रसार हुआ।

2. चीन के लोगों ने कुतुबनुमा (कम्पास) का आविष्कार किया, इससे समुद्री यात्राएं आसान हुई।

3. चीनी लोगों द्वारा छापेखाने का आविष्कार।

4. चीन द्वारा कागज का आविष्कार।

5. इंग्लैंड में केक्सटन द्वारा छापेखाने की स्थापना (1447 ई.)

6. वैज्ञानिक चेतना नई विधा (न्यू लर्निंग) का विकास।

पुनर्जागरण का प्रभाव –

1. साहित्य के क्षेत्र में – पहले – विषय–वस्तु धार्मिक थी।

लेखक मुख्यतः पादरी ही होते थे।

भाषा–लैटिन ही होती थी।

आस्था को परंपराओं के आधार पर लिखा जाता था।

अब – प्रादेषिक भाषाओं का विकास।

इटेलियन, फ्रेंच, स्पेनिश, डच, इंग्लिश भाषाओं का विकास।

जन सामान्य लेखकों के रूप में उभरने लगे।

विषय–वस्तु में मानवीय समस्याएँ, भावनाएँ एवं वेदना आदि को अपनाया गया।

प्राकृतिक स्थितियों का वर्णन, आस्था परंपरा की जगह तार्किकता के आधार पर पुस्तकें लिखी जाने लगी।

इटालियन – दाँते – डिवाइन कॉमेडी, कविता लेखक

पैट्रार्क–मानवतावाद के जनक, जीवनी लेखक। सोनेट फिसिनो– प्लेटो के पूरे दर्षन का अध्ययन।

मैकियावली – 'द प्रिंस' मध्ययुग का शिशु।

हास्य कथाओं बुकासियों – डैकेमेरोन (तात्कालीन इतावली सम्पन्न व सभ्रांत समाज का नैतिक भ्रष्टाचार)

फ्रेंच – राइबले – ''केवल मनुष्य हँस सकता है।''

गारगेन्तुआ, पाताग्नुएल।

मोतासनिओ – निबंधकार। व्यक्ति के सम्मानपूर्वक जीवन के विचारक।

अंग्रेजी साहित्य– चौसर – केन्टरबरी टेल्स।

इस पुस्तक में रूढ़ियों पर व्यंग्य।

लोक कथाओं को साहित्यिक स्वरूप प्रदान किया।

दूब्रेप्रसाद–पेरिस

टपॉल गिरजाघर –लंदन

एस्कोरियल प्रासाद –स्पेन

टॉमस मूर– यूरोपिया (काल्पनिक) नामक ग्रंथ। इसमें भविष्य के आदर्ष समाज का उल्लेख।

शेक्सपियर – मैकबेथ, हेमलेट, किंगपियर, ओथेलो, रोमियो जूलियट, मर्चेन्ट ऑफ वेनिस।

डच– इरैस्मस–मानववादी लेखक।

इन द प्रेज ऑफ फॉली (मूर्खता की प्रषंसा) – व्यंग्नात्मक शैली

2. स्थापत्य कला पर प्रभाव – अब तक यूरोप में मध्यकालीन स्थापत्य शैली – गोथिक (बर्बर) शैली प्रचलित थी, जिसमें नुकीले मेहराब का प्रयोग होता था।

इसके स्थान पर क्लासिकल शैली (शास्त्रीय) जो कि रोमन व यूनानी परंपराओं से प्रेरित थी। वृताकार मेहराब, अलंकृत स्तंभ एवं विशाल गुम्बद।

धार्मिक व गैर–धार्मिक दोनों प्रकार की इमारतों को संरक्षण। व्यापारिक वर्ग, धनिक वर्ग और चर्च के पास अपार संपदा। ये अपनी शक्ति को भवनों के माध्यम से व्यक्त करने का माध्यम था।

इटली में फ्लोरेन्स का मेंडिची परिवार
मिलान का स्पोटजास परिवार } स्थापत्य को संरक्षण

फ्रांस के लुआर प्रांत में सामंतों के निवास, जिन्हें शातो कहते है, इसी समय के बने हुए है।

रोम का सेंट पीटर चर्च पुनर्जागरण का सबसे महत्त्वपूर्ण उदाहरण– पालाबिओन, माइकल एंजेलो, राफेल प्रमुख वास्तुकार थे।

3. मूर्तिकला पर प्रभाव – पहले धार्मिक विषय वस्तु पर मूर्तियां बनती थी। अब धर्मेत्तर विषयों पर।

प्रमुख मूर्तिकार – दोनों तेलो – बच्चों की मूर्तियां, प्राकृतिक मूर्तियां।

इस काल का मूर्तिया जितना अर्थ को मूर्त करने में सक्षम था उतना ही करूणा को

लारेन्जो गिर्बेती – इरेस्मा/नारती कांसे की बनी मूर्ति।

इसकी मूर्तियां फ्लोरेस के गिरजाघरों के बाहर लगी है।

माइकल एंजलो – पीटर की मूर्ति, पेटा की मूर्ति।

जीजस को क्रास से उतारते है तो मदर मैरी ने इन्हें गोद में ले रखा है, जहां जीसस दम तोड़ रहे है।

इन्होंने 400 मूर्तियों का निर्माण किया।

4. चित्रकला पर प्रभाव – पहले – विषय–वस्तु धार्मिक।

चित्र कागज या लकड़ी पर बनाये जाते थे।

सादगीपूर्ण रंगों का प्रयोग, अनुषासन का विशेष ध्यान।

अब – विषय–वस्तु मानव जीवन, संवेदना, भावनाएँ, प्राकृतिक दृष्य, सौन्दर्य बोध।

चित्र अब कैनवास पर बनते थे।

जायेटो को आधुनिक चित्रकला का जनक माना जाता है उसने सबसे पहले कैनवास पर चित्र बनाया।

चमकीले, चटकीले रंगों का प्रयोग।

तैलीय चित्रों का निर्माण किया जाने लगा।

प्रमुख चित्रकार – जायेटो, लियोनार्दो–द–विन्ची।

चित्रकार के साथ–साथ दार्षनिक इन्हें कम्पलीट मैन माना जाता था।

जियटो प्रथम चित्रकार था, जिसने मानव व प्रकृति पर अनेक चित्र चित्रित किये।

स्पोटजास व मेडिची परिवारों ने संरक्षण दिया, अंतिम समय में फ्राँस के राजा ने संरक्षण दिया।

महत्वपूर्ण चित्र – मोनालिसा (लगायाकोन्डा)

द लास्ट सपर

माइकल एंजेलो – द लास्ट जजमेंट।

सिस्टाइन चैपल की चर्च की दीवारों पर सृष्टि के आरंभ से प्रलय तक का चित्र।

एषियन – वेनिस की गरिमा के चित्र।

लबायन – समकालीन एतिहासिक व्यक्तियों के चित्र।

राफेल :– मेडोना – दिव्य नारीत्व का प्रदर्षन। – चित्रों में वैष्णव एवं समरूपता में बहुत आगे था।

उसने चित्र सुंदरता व सजीवता के कारण प्रसिद्ध है।

5. संगीत के क्षेत्र में प्रभाव –यद्यपि आरंभ में ईसाई धर्म में संगीत पर निषेध था लेकिन कालांतर में एम्ब्रोज ने चर्च में संगीत का आरंभ किया।

मार्टिन लूयर ने इसकी शुरूआत की।

पिआनो, वायलीन इसी काल में आरंभ। ओपेरा संगीत भी पुनर्जागरण के दौरान आरंभ।

पेलेसचीयन ने सामूहिक गीतों की बुक 'मोजेज' लिखी। मास्किनस इस समय का महान् संगीतकार।

6. मानववाद का विकास –अब तक ईष्वर को केन्द्र में रखकर धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप जो सामाजिक व नैतिक निर्णय किये जाते थे उनके स्थान पर चिंतन का केन्द्र मनुष्य को बनाया।

मानव सम्मान और उसके महत्व पर बल दिया गया।

मनुष्य के सुख–दुख को ध्यान में रखकर मान्यताओं का निर्धारण किया गया। मानवता के अन्तर्गत पारलौकिकता के बजाय इहलौकिकता, आदर्शवाद के बजाय यथार्थवाद, संपूर्ण स्वतंत्रता के बजाय व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अंधविष्वास, रूढ़ियों के स्थान पर तर्क संगतताओं को अधिक महत्व दिया गया।

उद्देष्य –मनुष्य के जीवन को कैसे अधिकाधिक सुख–सम्पन्न व सुविधापूर्ण बनाया जाये या आध्यात्मिकता के बजाय भौतिकता के समर्थक सिद्धांत।

पुनर्जागरण के दौरान सभी व्यक्तियों, विचारकों, कलाकारों पर न्यूनाधिक रूप से मानवता का प्रभाव पड़ा।

7. धार्मिक प्रभाव – धर्म सुधार आंदोलन।

8. राजनीतिक प्रभाव – 1. राष्ट्रीय राज्यों का उदय।

राष्ट्रवाद की भावनाओं से प्रेरित राजतंत्रात्मक शासन पद्धति जिसमें राजाओं के पास अधिकाधिक शक्ति होती है।

2. सामंतवाद का पतन–इससे पहले यूरोप में शक्ति सामंतों के पास थी इसलिए केन्द्रीय शक्तियां दुर्बल थी।

3. चर्च का वर्चस्व कम/समाप्त।

4. क्षेत्रीय शिक्षा का विस्तार।

5. साम्राज्यवादी भावनाओं का उदय।

6. मध्यम वर्ग का उदय।

7. धर्म सुधार आंदोलन।

8. मध्यम वर्ग व राजाओं में अन्तर्विरोध बढ़ने लगा जिसकी परिणति फ्रांसीसी क्रांति में देख सकते है।

9. विज्ञान पर प्रभाव – कॉपरनिक्स का सिद्धांत– टॉलमी का सिद्धांत।

टॉलमी के अनुसार पृथ्वी संपूर्ण ब्रह्मांड का केन्द्र है।

कापरनिक्स के अनुसार सूर्य सौरमण्डल का केन्द्र है। पृथ्वी सहित सभी वस्तुएं इसके चारों ओर चक्कर लगाती है।

शैलिलियों ने दूरबीन का आविष्कार किया।

रोजर वेकन – सूक्ष्मदर्शी यंत्र

वेसेलियम – मानव शरीर की रचना

विलियम हार्वे – रक्त प्रवाह

इटली में ही पुनर्जागरण का आरंभ क्यों ?

इटली के नागरिक और योद्धा वर्ग सशक्त थे। इन्होंने इटली में सामंती ढाँचे को अधिक प्रभावशाली नहीं होने दिया। प्रांतों में सामंतों को टिकने नहीं दिया। इसलिए सामंत नगरों में जाकर रहने लगे।

इटली के व्यावसायिक वर्गों की प्रकृति अलग थी जबकि शेष यूरोप में सामंती ढांचा मध्यकालीन परंपराओं पर आधारित था। सामंती ढाँचे का स्वरूप सषक्त नहीं था, इसलिए नई मान्यताओं को आश्रय मिलता है।

इटली की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार थी कि पूर्वी देषों का यूरोप के साथ होने वाले व्यापार का बहुत बड़ा भाग इटली के माध्यम से होता था।

विदेशी व्यापार – नगरों का विकास

– पूंजीपति वर्ग का उदय जिन्होंने कलाकारों एवं कला को संरक्षण दिया।

– विदेशी संस्कृतियों से संपर्क अधिक। इससे परंपरागत संकीर्णता से बचाव होता है।

– धर्मयोद्धा वापिस लौटते समय इटली में ठहरते थे और अरब संस्कृति के अनुभव इटली वासियों में बांटते थे।

– कुस्तुनतुनिया पर जब तुर्कों ने आक्रमण किया तो वहां से अधिकतर विद्वान इटली पहुंचे।

इटली प्राचीन रोमन सभ्यता की जन्म स्थली थी।

पोप का केन्द्र रोम था। यद्यपि अधिकतर पोप प्रतिक्रियावादी होते थे लेकिन कुछ उदारवादी भी हुए जिन्होंने शिक्षण संस्थाओं, पुस्तकालयों की स्थापना की।

षिक्षा व्यवस्था – व्यापारिक समृद्धि के कारण इटली की शिक्षा व्यवस्था उदार व बहुआयामी थी।

धर्म सुधार आंदोलन

धर्म सुधार आंदोलन के कारण :–

1. पुनर्जागरण – इसने धर्मसुधार को प्रेरित किया। पुनर्जागरण के परिणाम स्वरूप –(i) स्वतंत्र चिंतन – की प्रवृति विकसित हुई और स्वतंत्र चिंतन का आधार तार्किकता है। तार्किकता अंधविष्वासों और रूढ़ियों की विरोधी है।

2. मानववाद – मानववाद जो कि मनुष्य केन्द्रित विचारधारा है इसलिए स्वाभाविक रूप से इसकी प्रतिस्पर्धा ईष्वर केन्द्रित विचारधारा धर्म से होती है। धर्म की उन बातों पर प्रष्न उठता है जो मानवहितों के विपरीत है।

3. राष्ट्रीय भावना – पुनर्जागरण ने लोगों में राष्ट्रीय भावना का विकास किया। ये राष्ट्रीय भावना पोप की सर्वोच्च सत्ता के विरूद्ध प्रतिक्रिया का रूप लेती है। पोप इससे पहले सर्वोच्च था। सभी राज्य पोप के नियंत्रण में आता था।

4. पुनर्जागरण का प्रभाव भौगोलिक खोजें – विभिन्न वर्गों के पारस्परिक संपर्कों के कारण रूढ़ियों का अंत।

5. वैज्ञानिक आविष्कार – छापेखाने का आविष्कार।

कापरनिक्स ने सूर्य को केन्द्र माना।

2. धार्मिक कारण – ईसाई धर्म आडम्बरों से युक्त हो गया और वह पतनोन्मुख हो गया। चर्च में भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया। और विलासिता के केन्द्र बन गये। ईसाई धर्म में पादरियों के ब्रह्मचर्य की व्यवस्था की किन्तु पादरियों की अवैध संतानों के झुंड हो गये। चर्च धर्म के कोष बन गये थे। चर्च विभिन्न करों को एकत्रित करते थे। चर्च में बड़े–बड़े पदों का विक्रय होता था जिससे अयोग्य व अशिक्षित लोग चर्च में पहुँचने लगे।

धर्माधिकारियों के प्रषिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं थी। उत्तरोतर रोम के वैभव को बढ़ाने का प्रयास, चर्च द्वारा लोगों का आर्थिक शोषण। इन विकृतियों के विरूद्ध सुधार की तरफ कोई ध्यान नहीं। इसी स्थिति के कारण निष्चित रूप से सुधार की आवष्यकता महसूस हुई।

चर्च की प्रतिक्रियावादी दमननीति ने लोगों को सदैव आतंकित किए रखा।

सिर्मानी – चर्च के पदों व सेवाओं का चक्र।

नेपोटिज्म – संबंधियों के बीच लाभकारी चर्च के पदों का बंटवारा।

प्लुरेलिज्म – एक पादरी द्वारा एक से अधिक पद।

3. राजनीतिक कारण – पोप यूरोप में सर्वोच्च शक्ति के रूप में उभर रहा था और वह परोक्ष रूप से सभी राज्यों पर अपने नियंत्रण स्थापित कर रहा था। पोप का राजनैतिक हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा था। पोप के

द्वारा प्रत्येक राज्य में एक धर्मधिकारी जो राज्य के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करता था। चर्च एक धार्मिक संस्था होने के बावजूद न्यायिक तथा आर्थिक शक्तियां ग्रहण कर रहा था। वह लोगों से अनेकानेक प्रकार के कर वसूलता था। न्यायिक कार्य भी करता था। इससे विभिन्न राज्यों में चर्च के प्रति असंतोष पनप रहा था।

4. आर्थिक कारण – चर्च अनेकानेक प्रकार के कर व भेंट प्राप्त करता था, इसलिए धर्म का प्रभाव विभिन्न राज्यों से रोम की तरफ हो रहा था। इस प्रवाह से समाज के सभी वर्ग असंतुष्ट थे। इससे राजा को लगता था कि रोम जाने वाला धन उसके हिस्से का है। जन सामान्य कर के बदले सुविधाओं की अपेक्षा करता था। जब उसे वह सुविधाएं उपलब्ध नहीं हुई तो उनमें भी असंतोष पैदा हुआ। पूंजीपति वर्ग भी यह सोचता था कि चर्च को दिया जाने वाला धन अनुत्पादक है। इससे उनमें भी असंतोष की प्रवृति जागृत हुई। व्यापार में नयी–नयी आर्थिक प्रवृति पैदा हुई। ईसाई धर्म में सूद देना धर्म के विपरीत माना जाता था।

5. तात्कालिक कारण –क्षमापत्रों की बिक्री (1517 ई.) – पोप लियो दषम ने क्षमापत्रों की बिक्री आरंभ की इसकी मान्यता थी कि व्यक्ति क्षमापत्रों को खरीदकर अपने पापों का प्रायष्चित कर सकता है। (आर्कबिशप अल्बर्ट को पोप ने यह कार्य सौंपा)

महान् नेतृत्वकर्ता – मार्टिन लूथर, कार्डिन, ज्विग्ली, इग्नेशियस लायेला (कैथोलिक) आदि प्रमुख सुधारक हुए जिन्होंने धर्मसुधार में अपना योगदान दिया।

इरैस्मस तथा अन्य मानवतावादियों ने चर्च का महत्व किया व उसके अंधविष्वासों का मजाक उड़ाया और लोगों के मस्तिष्क में चर्च का महत्व कम किया।

- नुत्रण कला के विकास के कारण धार्मिक मूलग्रंथों का सस्ती प्रतियां लोगों को उपलब्ध होने लगी।
- लूथर द्वारा बाइबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद।

जॉन वाइक्लिफ आरंभिक धर्म सुधारक हुआ, उसके शिष्यों को लोलार्ड कहते है।

↓

The Morning star of Reformation

1. मार्टिन लूथर – मार्टिन लूथर का जन्म जर्मनी में एक किसान परिवार में हुआ। पिता की इच्छा थी कि वह वकील बने परंतु मार्टिन लूथर की रूचि धर्मषास्त्रों में अधिक थी।

1512 ई. में जब वह रोम की यात्रा करता है तो वहां पोप की जीवनशैली देखकर धमशास्त्रों से उसकी आस्था खत्म हो जाती है।

1517 ई. में टेटजेल जो विटेनबर्ग में क्षमापत्रों की बिक्री के लिए आता है तो मार्टिन लूथर ने लैटिन भाषा में 95 थीसीस लिखे और विटेनबर्ग चर्च के बाहर चिपका दिये। कुछ समय बाद इसका जर्मन भाषा में अनुवाद कर लोगों में बांट दिया।

प्रमुख पुस्तकें –

1. ''जर्मन सामंतवर्ग को संबोधन'', दी केप्टिविटी ऑफ दी चर्च

2. ''ईश्वरीय चर्च की बेबी लोनियाई कैद'' इस पुस्तक में उसने पोप के विलासितापूर्ण जीवन का वर्णन किया है और स्पष्ट किया कि किस तरह ईश्वरीय चर्च पथ भ्रमित हो गया है।

3. ''ईसाई मनुष्य की मुक्ति'' इसमें बाइबिल का महत्व स्पष्ट किया है। और बताया है कि व्यक्ति की मुक्ति हेतु चर्च की मध्यस्थता आवष्यक नहीं। व्यक्ति स्वयं बाइबिल पढ़कर मुक्ति हासिल कर सकता है।

1520 में पोप ने मार्टिन लूथर को धर्म से निष्कासित कर दिया। इन आदेशों को पेपरबुल कहते है। मार्टिन लूथर ने अब इन आदेशों को सार्वजनिक रूप से जनता के सामने जला दिया अब उसने राजाओं से संपर्क स्थापित किया।

1525 ई. में जर्मनी में किसान विद्रोह हुआ। इसमें वह राजाओं को समर्थन करता है और उन्हें प्रेरित करता है कि वे शीघ्रता से इस विद्रोह को कुचल दे।

कमियाँ – राजाओं का समर्थक था।

– राजतंत्रात्मक व्यवस्था का पक्षधर था।

नाममन, प्रायष्चत व प्रासाद – लूथर द्वारा माने जाने वाले 3 संसार

(बैपटिज्म) (पेनैस) (यूकेरिस्ट)

– राजा के दैवीय सिद्धांत का पक्षधर था।

– दास–प्रथा का समर्थक था।

1526 ई. में स्पीयर में पहली सभा बुलाई गई और इसका समाधान करने की कोशिश की गई। (चार्ल्स पंचम् पवित्र रोमन साम्राज्य का शासक)

1529 ई. में स्पीयर में दुबारा बैठक बुलाई गई और इसमें विरोधियों के विरूद्ध कठोर प्रस्ताव पारित किये गये। जिन शासकों ने इन्हें नहीं माना, उन्हें प्रोटेस्टेंट कहते है। (19 अप्रैल 1529 से इसका आरंभ) इस सभा में प्रस्तावों का विरोध हुआ, इसलिए इसे प्रोटेस्टेंटवाद कहते है।

1549–55 ई. तक जर्मनी में गृहयुद्ध।

जर्मनी के शासक अब दो वर्गों– प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक में बंट गये।

1546 ई. में मार्टिन लूथर की मृत्यु हो गयी।

1555 ई. में आंग्सबर्ग की संधि। इसके परिणामस्वरूप जर्मनी में गृहयुद्ध की समाप्ति। (फर्डिनेण्ड और प्रोटेस्टेंट के मध्य)

इस संधि में लूथरवाद को पृथक धर्म के रूप में मान्यता दी गई।

शासकों को धर्म निर्धारित करने की स्वतंत्रता दी गई।

1552 ई. से पहले प्रोटेस्टेंटवादियों ने जो चर्च की संपत्ति छिनी उसे मान्यता दे दी गई।

धार्मिक आरक्षण का विधान – इसके अनुसार यदि विषेष स्तर के अधिकारी प्रोटेस्टेंटवाद को स्वीकार करते है तो उन्हें अपने पद से इस्तीफा देना होगा।

कुछ राज्यों में अल्पसंख्यकों का धर्म परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। प्रोटेस्टेंट को कैथोलिक बाहुल्य वाले क्षेत्रों में अपना धर्ममत त्यागने को बाध्य नहीं।

कमियां – 1. लूथरवाद को मान्यता।

2. जनता को धर्म निर्धारण की स्वतंत्रता नहीं।

3. 1618 ई. में जर्मनी में पुनः गृहयुद्ध की शुरूआत और यह 30 वर्षों तक लड़ा गया।

4. 1648 ई. में वेस्टफेलिया की संधि।

इसमें प्रोटेस्टेंटवादियों की सभी मांगे स्वीकृत की गई।

1523 ई. में यह कैथोलिक चर्च से अलग हो गया

2. ज्विंग्ली – यह स्विटजरलैण्ड का निवासी था। स्विटजरलैण्ड के 13 गणराज्यों को छोड़कर अन्य सभी पर पवित्र रोमन साम्राज्य का अधिकार था। इन 13 गणराज्यों में ज्विंग्ली के धार्मिक उद्देश्यों का प्रभाव था। इसने 1525 ई. में Reformed Church का निर्माण किया।

1531 ई. में कोपेल की संधि हुई, इसमें Reformed Church को मान्यता मिली।

ज्विंग्ली कट्टर राष्ट्रवादी था। इसी वजह से ही उसने चर्च से विद्रोह किया। उससे यह सहन नहीं होता था कि स्विस सैनिक अन्य देशों के लिए लड़े। धर्म के क्षेत्र में उपवास का विरोध, पादरी के ब्रह्मचर्य और संतों की पूजा को गलत बताया।

3. काल्विन – काल्विन का जन्म फ्रांस में हुआ था। और कैथोलिक चर्च ने ही इसकी आरंभिक षिक्षा की व्यवस्था की थी। चर्च को सुधारने हेतु इसने फ्रांस में प्रयास किये। यहां इसका विरोध हुआ। कालांतर में यह स्विस चला गया।

इसके अनुयायी लूथर से भी ज्यादा थे। इसके अनुयायी ब्रिटेन (प्यूरिटन), अमेरिका, फ्रांस में फैले हुए थे।

ब्रिटेन में कुछ उग्र प्यूरिटन थे। ब्रिटेन के शासकों द्वारा इनके शोषण के कारण ये अमेरिका चले गये।

काल्विन ने 'ईसाई धर्म के आधारित सिद्धांत' नामक पुस्तक लिखी।

काल्विन लूथर से कई बातों में भिन्न था।

• मार्टिन लूथर जहां धर्म व राजनीति को पूरी तरह पृथक नहीं करता वहीं काल्विन इसे पूरी तरह पृथक करता है।

• लूथर राजतंत्रात्मक शासन और काल्विन जनतंत्रात्मक शासन व्यवस्था का समर्थक था।

• लूथर जहां तीन संस्कारों में विश्वास करता था वहीं काल्विन दो संस्कारों को मानता था।

• लूथर चमत्कार को प्रतिकात्मक रूप से स्वीकार करता था जबकि काल्विन चमत्कार का पूर्ण विरोधी था।

• काल्विन लूथर की बजाटा अधिक यथार्थवादी व वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखता था।

• लूथर कर्मवाद में विष्वास करता था वहीं काल्विन नियतिवाद में विष्वास करता था।

• लूथर ईसाई धर्म की विकृतियों में उदारवादी दृष्टिकोण से सुधार लाना चाहता था जबकि काल्विन कठोर तरीके से ईसाई धर्म में आमूल–चूल परिवर्तन का पक्षधर था।

• धर्म के प्रश्न पर जर्मनी के राज्य 2 दलों में बंट गये –

प्रोटेस्टैण्ट	कैथोलिक
. लूथर के समर्थक	. लूथर के विरोधी
. सुधारवादी	. प्राचीन धर्म के अनुयायी

* प्रोटेस्टेंट धर्म का औपचारिक उद्भव 19 अप्रैल 1529 ई. से माना जाता है।

इरेस्मस (1466–1536 ई.) – हॉलैंड निवासी, मानववादी लेखक

– दी प्रेज ऑफ फोली (मूर्खता की प्रषंसा)

– पादरियों की जीवनशैली का उपहास

– 1516 में न्यू टेस्टामेंट का नवीन संस्करण प्रकाशित।

लूथर
↓
नामकरण

प्रायष्चित

प्रसाद (षराब व रोटी)

प्रतिधर्म सुधार – यह धर्मसुधार आंदोलन के समानान्तर एक प्रतिवाद के रूप में शुरू हुआ था। अतः इसे 'Counfer Reformation' भी कहते है। 1545 से 1563 तक ट्रेंट में। रोमन कैथोलिक चर्च में सुधार के लिए इटली ट्रेंट नामक स्थान पर चर्च ही परिषद् का आयोजन। इसमें सुधार की दिशा में कई ठोस एवं महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये।

इसे दो भागों में विभक्त करते है – सैद्धांतिक आधार व्यावहारिक आधार

1. सैद्धांतिक आधार पर प्रत्येक धर्म के सिद्धांत देश, काल ओर स्थिति।

2. परंपरागत मान्यताओं पर पुनः बल दिया गया।

3. चर्च व पोप की सर्वोच्चता को स्थापित किया गया और यह कहा गया कि यह सर्वोच्च है।

4. बाइबिल की अंतिम व्याख्या का अधिकार चर्च ने अपने पास रखा।

5. सातों संस्कारों को मान्यता दी गई और चमत्कारों में आस्था।

6. बाइबिल के लैटिन संस्करण को ही स्वीकार किया गया।

2. व्यावहारिक आधार पर परिवर्तन –1. चर्च में पदों की बिक्री पर रोक। योग्यता के आधार पर नियुक्ति।

2. क्षमापत्रों की बिक्री पर रोक।

3. पादरियों के आचरण को संयमित बनाने का प्रयास।

4. पादरियों के प्रषिक्षण की व्यवस्था।

5. पादरियों को प्रादेषिक भाषाओं में उपदेष देने की छूट दी गई।

6. विरोधियों की पुस्तकें पढ़ने पर निषेध किया गया।

7. धार्मिक न्यायालय (इन्क्यूजियन) को मान्यता।

इग्नेशियस लायोला – स्पेन का सैनिक था। युद्ध में घायल होने पर उपचार के दौरान बहुत अधिक धार्मिक पुस्तकें पढ़ने के कारण इसकी आस्था कैथोलिक चर्च के प्रति बहुत बढ़ गई। इसने जीसस समाज की स्थापना की। 1535 ई. में रोमन कैथोलिक चर्च ने जीसस समाज को मान्यता दे दी। इसके अनुयायी जैसुइट कहलाते थे। लायोला कठोर अनुषासनप्रिय था। इसने कैथोलिक षिक्षकों को प्रषिक्षण देने का कार्य किया। इसकी प्रवेष प्रक्रिया बहुत कठोर थी। जीसस समाज में छोटी सी अनुशासनहीनता को भी स्वीकार नहीं किया जाता था। 1540 ई. में जीसस समाज ने चर्च की औपचारिक स्वीकृति मिल गयी।

कालांतर में मिश्र में कैथोलिक चर्च के विस्तार का श्रेय इसी जीसस समाज को जाता है। अफ्रीका व एशिया में ईसाई धर्म के प्रचार–प्रसार का श्रेय भी इसी जीसस समाज को है।

Springboard ACADEMY

धर्म सुधार आंदोलन के परिणाम :–

धार्मिक	राजनीतिक	सामाजिक	आर्थिक
1. रूढ़ियों, अंधविष्वासों पर आघात	1.राष्ट्रीय राज्यों का उदय सामंतवाद का पतन	1. समाज के नैतिक अनु.	1. आर्थिक विकास
2. प्रति धर्म सुधार	2. राष्ट्रवादी भावना का विकास	2. विवाह ही अवधारणा प्रभा.	2. पूंजीवाद
3. ईसाई धर्म में फूट	3. धर्म निरपेक्षता	3. व्यक्तिवाद सिद्धांत मजबूत	3. वाणिज्यवाद
4. धार्मिक सहिष्णुता / धर्मयुद्धों की श्रृंखला		4. व्यक्तिगत स्वतंत्रता	
5. धर्म का दखल कम			

धार्मिक परिणाम के अन्तर्गत मध्यकालीन रूढ़ियों, अंधविष्वासों आदि पर आघात हुआ। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ईसाई धर्म की पुर्नव्याख्या का प्रयास। इसी के कारण ही प्रति धर्म सुधार चला जिसके कारण चर्च में व्याप्त भ्रष्टाचार, विलासिता समाप्त हुई। ईसाई धर्म में फूट पड़ गई व अनेकानेक सम्प्रदाय अस्तित्व में आये। धर्मयुद्धों की एक लम्बी श्रृंखला जिसमें अनेकानेक लोग मारे गये। तीस वर्षीय धार्मिक युद्ध (1618–48 ई.)

राजनीतिक परिणामों के तहत राष्ट्रीय राज्यों का उदय हुआ जिससे सामंतवाद का पतन हुआ और पोप की सर्वोच्चता समाप्त हो गई। चर्च का राज्यों पर राजनीतिक नियंत्रण समाप्त हो गया। लोग राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक हो गये और उन्होंने राजा की शक्तियों पर लोकतांत्रिक तरीके से अंकुश लगाया। जागरूकता का अच्छा उदाहरण है ब्रिटेन। वहां के प्यूरिटनों ने चार्ल्स प्रथम को फांसी पर लटका दिया। लोगों में राष्ट्रवादी भावना का विकास हुआ। धर्म निरपेक्षता भी एक परोक्ष परिणाम था। धर्म निरपेक्षता एक राजनीतिक मूल्य के रूप में उभरी जो कि आज भी हमारी लोकतांत्रिक समाज की महत्वपूर्ण मांग है।

सामाजिक परिणामों के अन्तर्गत हम कह सकते है कि हमारी सामाजिक मान्यताओं का आधार धार्मिक विष्वास है। हर सामाजिक व्यवस्था की व्याख्या धार्मिक तर्कों से की जाती है और जब धार्मिक आदर्शों पर प्रश्न उठता है तो सामाजिक ढाँचा भी हिल जाता है। अनेकानेक सामाजिक परंपराओं व विश्वासों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पुनः निर्धारण किया गया। विवाह जैसी संस्था कमजोर हुई। व्यक्तिवाद का सिद्धांत अधिक मजबूत हुआ। अब समाज की बजाय व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व दिया जाने लगा।

आर्थिक परिणामों के तहत धर्म सुधार आंदोलन के कारण आर्थिक विकास की भूमिका तैयार थी क्योंकि धर्म सुधारकों ने आर्थिक दृष्टिकोण से उदार सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। पहले धन संग्रहण को पाप माना जाता था जबकि धर्म सुधारकों ने अधिकाधिक धनार्जन और व्यापार का समर्थन किया। सूद पर पैसा देना पहले पाप समझा जाता था, परंतु धर्म सुधारकों ने इसे स्वीकार किया। कालांतर में पूंजीवादी व्यवस्था को मान्यता मिली। पूंजीवादी व्यवस्था व राष्ट्रीय राज्यों के उदय के कारण वाणिज्यवाद का विकास हुआ।

सांस्कृतिक – 1. लोक भाषाओं का विकास – काल्विन – फ्रेंच
लूथर – जर्मन
} बाइबिल का अनुवाद

2. ललित कला को नुकसान

3. शिक्षा का प्रचार–प्रसार

Springboard ACADEMY

वर्ण व्यवस्था

वर्ण	आश्रम	पुरूषार्थ	संस्कार	ऋण	यज्ञ	विवाह
बाह्मण	ब्रह्मचर्य	धर्म	गर्भाधान	ऋषि	बह्म	बह्म
क्षत्रिय	गृहस्थ	अर्थ	पुंसवन	देव	देव	देव
वैश्य	वानप्रस्थ	काम	सीमंतोन्नयन	पितृ	पितृ	प्रजापत्य
शुद्र	सन्यास	मोक्ष	जातकर्म		मनुष्य यज्ञ	आर्ष
			नामकरण		भूत यज्ञ	
			निष्क्रमण			
			अन्न प्राशन			
			चूड़ाकर्म			
			कर्णवेध			
			विद्यारम्भ			
			उपनयन			
			वेदारम्भ			
			केशान्त / गोदान			
			समावर्तन			
			विवाह			
			अत्येंष्टि			

1. वर्ण व्यवस्था :– ऋग्वेद में प्रारम्भ में वर्ण शब्द का अर्थ रंग बताया गया हैं। आर्यों के लिए और वर्ण तथा अनार्यों के लिए कृष्ण वर्ण शब्द का उल्लेख हुआ है।

वर्ण शब्द वृ धातु से बना है जिसका अर्थ होता है – वरण करना या चुनाव करना। यहां पर चुनाव करना से तात्पर्य है कि व्यवसाय का चुनाव करना। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पुरूषसूक्त में वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति का सिद्धांत दिया गया है। जिसके अनुसार विराट पुरूष के मुख से ब्राह्मण भुजाओं से क्षत्रिय, जांघों से वैश्य तथा पैरों से शुद्र का जन्म हुआ है।

प्राचीन काल में मनुष्य की मनौवैज्ञानिक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए समाज को व्यवसाय के आधार पर चार भागों में बांटा गया।

प्रारंभ में इस विभाजन का आधार व्यक्ति का गुण अथवा कार्य था। लेकिन कालांतर में इसका आधार जन्म से हो गया तथा वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में तब्दील हो गई इससे इसका शोषणकारी रूप सामने आया।

1. ब्राह्मण :– इस वर्ण में सात्विक गुण अधिक होता था। इनका मुख्य कार्य अध्ययन करना, अध्यापन करना, यज्ञ करना तथा यज्ञ कराना, दान देना व दान लेना था।

2. क्षत्रिय :– क्षत्रिय का अर्थ होता है वह जो रक्षा कर सके। इनमें सात्विक और राजसिक दोनों गुण होते है। इनका मुख्य कार्य रक्षा करना, अध्ययन करना, यज्ञ करना व दान देना है।

3. वैश्य :– इस वर्ण का मुख्य कार्य अध्ययन करना उत्पादन करना, संग्रह करना तथा दान देना है। इस वर्ण में राजसिक व तामसिक दोनों गुण होते है। गीता के अनुसार वैश्यों का मुख्य कार्य वार्ता है। जिसका अर्थ होता है – कृषि, पशुपालन तथा वाणिज्य।

4. शुद्र :– इस वर्ण में तामसिक गुण अधिक होता था। इनका मुख्य कार्य द्विजों (ब्राह्मण + क्षत्रिय + वैश्य) की सेवा करना माना जाता था। ये वर्ग अधिकार तथा संस्कारों से रहित था। सर्वप्रथम अर्थशास्त्र में शुद्रों को भी वार्ता का अधिकार दिया गया।

गुप्त काल में आपद धर्म की अवधारणा विकसित हुई जिसके तहत कोई व्यक्ति आपातकाल (स्थिति) में किसी दूसरे वर्ण का व्यवसाय भी अपना सकता है।

● **वर्ण व्यवस्था के प्रभाव :–**

सकारात्मक :– 1. कर्तव्यपालन व उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक बनाया जाता था। इसमें अनावश्यक प्रतियोगिता पर नियंत्रण लगता था। जिसमें वर्ग संघर्ष की स्थिति पैदा नहीं होती थी।

2. श्रम विभाजन व श्रम विशेषीकरण हो जाता था।

3. सांस्कृतिक विशेषताएं पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित हो जाती थी।

4. प्रारंभ में यह एक लचीली व्यवस्था थी जिसमें कोई भी व्यक्ति अपने गुण व कार्यों को सुधार सामाजिक स्थिति में बदलाव ला सकता था।

5. इसमें एक समतामूलक समाज की स्थापना की गई जिसमें सभी वर्णों की सीमाओं को स्थापित किया गया।

6. इस सामूहिक पद्धति के माध्यम से व्यक्तिगत विकास किया गया।

7. यह शक्ति सन्तुलन पर आधारित योजना थी जिसमें सारी शक्तियां एक ही वर्ग या समूह के पास केन्द्रित नहीं होती थी।

नकारात्मक प्रभाव :–1. कालान्तर में वर्ण व्यवस्था गुण अथवा कर्म के आधार पर नहीं रही बल्कि जन्म आधारित हो गई। जिससे समाज अनेक जातियों व उपजातियों में विभाजित हो गया। उनके पारस्परिक झगड़े बढ़ गए। जिससे सामुदायिक भावना संकुचित हो गई जो राष्ट्रीय एकता में बाधा बनी। जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था ने अस्पृश्यता को जन्म दिया जिससे शुद्र वर्ण को निम्न घोषित कर दिया गया तथा उन्हें विकास के समुचित अधिकार नहीं दिये गये।

● **आश्रम व्यवस्था :–** आश्रम शब्द की उत्पत्ति श्रम धातु से हुई है जिसका अर्थ होता है – प्रयास करना। प्राचीन भारतीय समाजशास्त्रियों ने मनुष्य जीवन को 100 वर्षों का मानकर उसे चार आश्रमों में विभाजित किया। प्रत्येक आश्रमजीवन की एक अवस्था है जिसमें व्यक्ति कुछ समय तक रहकर स्वयं को प्रशिक्षित करता है तथा इस प्रशिक्षण के आधार पर खुद को दूसरी अवस्था के योग्य बताता है।

आश्रम व्यवस्था का मानौवैज्ञानिक एवं नैतिक आधार **पुरूषार्थ** थे। जिसके आधार पर व्यक्ति को समाज से संबंधित किया जाता था। **छान्दोग्य** उपनिषद में केवल तीन आश्रमों का जिक्र मिलता है लेकिन **जाबालि** उपनिषद में चारों आश्रमों का वर्णन है।

Springboard ACADEMY

1. ब्रह्मचर्या आश्रम :–(0–25 वर्ष)

इसमें व्यक्ति को पारिवारिक जिम्मेदारियों से दूर रहकर विद्या अध्ययन करना होता था। इस आश्रम में व्यक्ति को संयमी जीवन जीने की सलाह दी जाती थी। उसे समाज के प्रति कर्त्तव्य बताए जाते थे। इस आश्रम में भिक्षावृत्ति का प्रावधान था ताकि व्यक्ति के अहंकार को समाप्त करके उसमें नम्रता का भाव लाया जा सके। ब्रह्मचारी दो प्रकार के होते थे :–

(i) उपकुर्वाण :– वे ब्रह्मचारी जो 25 वर्ष में अपनी शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद गुरू को दक्षिणा देकर समावर्तन संस्कार के तहत गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते थे।

(ii) नैष्ठिक :– ये ब्रह्मचारी गृहस्थ आश्रम में प्रवेश नहीं करते थे तथा गुरू के समीप ही रहकर लंबे समय तक अध्ययन करते रहते थे। इन्हें अन्तेवासी भी कहा जाता है।

2. गृहस्थ आश्रम :– (25 से 50 वर्ष)

व्यक्ति शिक्षा पूरी करने के बाद अपने सामाजिक जीवन में प्रवेश करता है। धर्मानुसार विवाह करता है तथा अपनी व अपने पर निर्भर लोगों की जिम्मेदारियां उठाता है। धन का संग्रह करता है। धर्म अर्थ व काम तीनों पुरूषार्थों का प्रयोग करता है। गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ आश्रम बताया गया है। इस आश्रम में व्यक्ति अपने समस्त सामाजिक दायित्वों को निभाता था। वह तीनों ऋणों से (ऋषि ऋण, देव, पितृ ऋण) उऋण होता हैं तथा पंचमहायज्ञ (ब्रह्म, देव, पितृ, मनुष्य, भूत) सम्पन्न करता हैं।

3. वानप्रस्थ आश्रम :– (50–75 वर्ष)

इस आश्रम में व्यक्ति अपनी गृहस्थ जिम्मेदारियों से मुक्त होकर वन में प्रस्थान करता है। अब उसका कार्य अध्ययन करना व ध्यान करना होता है। वह समाज के लिए कल्याणकारी योजनाओं के बारे में सोचता है। वह विद्यार्थियों को निशुल्क शिक्षा देता है। नई पीढ़ी को बेहतर गृहस्थ बनाने के बारे में प्रयास करता है। इस आश्रम में व्यक्ति कायाक्लेश (अपने शरीर को दुख देकर) के माध्यम से अपने मन को सांसारिक जीवन से हटाने का प्रयास करता है। वह सभी के प्रति मैत्री भाव रखता है।

4. संन्यास आश्रम :– (75–100 वर्ष)

हिन्दु धर्म के अनुसार जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष माना जाता था। अतः इस आश्रम में व्यक्ति तपस्या के माध्यम से जीवन मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त करने का प्रयास करता है। वह अपने परलोक को सुधारता है। संन्यासी व्यक्ति विवाह भ्रमणशील रहता था तथा अपने अनुभवों को लोगों के बीच बांटता था।

महत्व :– 1. मनुष्य के जीवन का वैज्ञानिक वर्गीकरण किया गया।

2. आश्रम व्यवस्था के तहत व्यक्ति में मानवीय गुणों का विकास किया जाता था। जैसे – त्याग बलिदान कर्तव्य पालन।

3. इस व्यवस्था के कारण समाज को आर्थिक समस्या व बेरोजगारी का सामना नहीं करना पड़ता था।

4. नई पीढ़ी को हमेशा मार्गदर्शन मिलता रहता था।

5. इस व्यवस्था में व्यक्ति को स्वनियंत्रित व स्व–अनुशासित होना सिखाया जाता था।

6. इस अवस्था में भौतिकवाद व आध्यत्मिकता के बीच समन्वय होता था।

तीन ऋण :–

1. ऋषि ऋण :– ऋषियों ने हमें वैदिक साहित्य प्रदान किया है। अतः हमें वैदिक साहित्य का अध्ययन करके तथा उसे आगे बढ़ाकर ऋषियों का ऋण उतारना चाहिए।

Springboard ACADEMY

Ethics (नीतिशास्त्र)

Ethics शब्द की उत्पत्ति युनानी भाषा के शब्द एथिका (Ethica) से हुई है, जो इसी भाषा के एथोस (Ethos) शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ– रीति–रिवाज। इसी प्रकार Morality शब्द है लैटिन भाषा के 'मोरस' (Moras) शब्द से बना है और इसका अर्थ होता है – रीति–रिवाज।

इसका तात्पर्य है मानव के सामाजिक रीति–रिवाजों तथा मान्यताओं के अनुरूप आचरण करना, नैतिकता माना जाता था। लेकिन वर्तमान नीतिशास्त्र की व्याख्या भिन्न रूप में की जाती है।

• **नीतिशास्त्र :–** नीतिशास्त्र वह आदर्श मूलक विज्ञान है, जो सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाले सामान्य मनुष्यों के आचरण या एच्छिक कर्मों पर निष्पक्ष एवं व्यवस्थित रूप से विचार करके उनके संबंध में उचित, अनुचित या शुभ–अशुभ का निर्णय देने के लिए मापदण्ड प्रस्तुत करता है तथा इसके तहत कुछ 'मूल सिद्धांतों' तथा आदर्शों की स्थापना करता है।

विशेषताएं :– 1. यह एक आदर्श मूलक विज्ञान है तथा यह केवल मनुष्यों के आचरण पर विचार करता है।

2. यह सामान्य मनुष्य के एच्छिक कर्मों का मूल्यांकन करता है।

3. यह कुछ सिद्धांतों तथा आदर्शों की स्थापना करता है।

• **संकल्प स्वातंत्रय :–**नीतिशास्त्र की पूर्व मान्यता है कि व्यक्ति के पास संकल्प स्वातंत्रय होता है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होता है अर्थात् व्यक्ति अतिप्राकृतिक सत्ता के हाथ की कठपूतली नहीं है। यह सिद्धांत नियतिवादी का विरोधी सिद्धांत है ।

• **संकल्प स्वातंत्रय के लिए तीन शर्तों का पूरा होना आवश्यक है :–**

1. विकल्पों की उपलब्धता

2. कार्य करने की क्षमता

3. कार्य के परिणामों की समझ (मानसिक क्षमता होनी चाहिए)

• **अपवाद :–** निम्न कार्यों को नीति शुन्य कार्य माना जाता है।

→ बच्चों के कार्य

→ मानसिक रूप से विक्षिप्त व्यक्तियों के कार्य

→ बिना सोचे समझे आकस्मिक होने वाले कार्य

→ अचेतन या अर्ध चेतन अवस्था में किए गए कार्य

→ दबाव में किये गये कार्य

→ भूल से होने वाले कार्य

• **शुभ :–** नैतिक दृष्टि से जो कार्य अच्छे होते है उन्हें शुभ कार्य कहा जाता है।

• **अशुभ :–** जो कार्य नैतिक दृष्टि से बुरे होते है उन्हें अशुभ कार्य माना गया है।

• **नैतिकता के निर्धारक तत्व :–** नैतिक नियम सार्वभौमिक नहीं होते है। देश काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप नैतिक नियमों में परिवर्तन होता रहता है। और अनेक परिस्थितियां इनके निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जैसे कि –

1. भौगोलिक कारक (Geographycal Factor) :- ठण्डे प्रदेश में मांसाहार व शराब स्वीकृत होते है, जबकि गर्म प्रदेश में मांस व शराब का सामान्यतः प्रचलन नहीं होता है। तटवर्ती क्षेत्र के ब्राह्मण व कश्मीरी पण्डित मांस खा सकते है। कृषि आधारित समाज शाकाहारी होगा तथा पशुपालन आधारित समाज मांसाहारी होगा।

2. सामाजिक कारक (Social Factors) :- यदि मध्यकालीन समाज है तो वहां पर्दा प्रथा व बाल विवाह को नैतिक माना जाएगा। सामाजिक भेदभाव को भी नैतिक माना जाएगा। लेकिन अगर आधुनिक समाज है तो इसमें उपर्युक्त चीजों को अनैतिक माना जाएगा। सामाजिक समानता पर अधिक बल दिया जायेगा।

3. धार्मिक कारक :– धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप नैतिक मूल्यों का निर्धारण होता है। जैसे कि जैन धर्म में शराब व मांसाहार को अनैतिक माना गया है जबकि इस्लाम धर्म में मांसाहार को नैतिक व शराब को अनैतिक माना गया है। इस्लाम में सामाजिक समानता को नैतिक माना जाता है, जातीय भेदभाव का विरोध किया जाता है। लेकिन महिलाओं को समानता का दर्जा नहीं दिया जाता है। लेकिन हिन्दू धर्म में जातिगत भेदभाव व्याप्त है।

4. आर्थिक कारक :– समाजवाद में आर्थिक सम्पन्नता पर अधिक बल दिया जाता है और व्यक्तिगत संपत्ति के अधिकार को महत्व नहीं दिया जाता है। जबकि पूंजीवाद के अंदर लाभ की इच्छा को नैतिक माना जाता है और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्व दिया जाता है।

• **नैतिक आचरण के मूल्यांकन के आधार :–**

(किसी व्यक्ति के द्वारा किए गए कर्मों के मूल्यांकन के आधार)

1. कर्त्ता :– किसी छोटे बच्चे द्वारा किए गए कार्य नीति शून्य है।

→ यदि कोई कार्य मजबूरी में किया जाता है जैसे कि एक भूखे व्यक्ति ने रोटी की चोरी की है तो वह कम अनैतिक है जबकि अगर एक संपन्न व्यक्ति चोरी करता है तो वह अधिक अनैतिक है।

→ यदि कोई घायल व्यक्ति को पुलिस हॉस्पिटल ले जाती है तो यह कम नैतिक है क्योंकि यह उनका कर्त्तव्य है और अगर दूसरा व्यक्ति अपने जरूरी कार्य को छोड़कर किसी व्यक्ति को हॉस्पिटल पहुंचाता है तो यह उनका अधिक नैतिक है।

2. उद्देश्य के आधार पर कार्य का मूल्यांकन :–

→ यदि अच्छे उद्देश्य से कोई कार्य किया गया हो तो वह शुभ होता है भले ही उसका परिणाम नकारात्मक ही क्यों न हो।

→ यदि बुरे उद्देश्य से किया गया कार्य भले ही उसका परिणाम अच्छा हो वह कार्य अनैतिक होता है।

→ व्यक्तिगत लाभ की बजाय सामाजिक लाभ के लिए किया गया कार्य अधिक नैतिक होगा।

• **नैतिकता की तीव्रता को प्रभावित करने वाले कारक :–**

• **व्यक्तिगत कारक :–** यह प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह नैतिक नियमों का किस सीमा तक पालन करेगा।

सिगमण्ड फ्रायड की Theory के अनुसार व्यक्तित्व के हिस्से –

(i) Id - मूल प्रवृतियां

(ii) Super Ego - यह समाज द्वारा विकसित किया गया नैतिक मन होता है कुछ इसे अंतरात्मा भी कहते है जब व्यक्ति कोई गलत कार्य करता है तो यह उसे रोकता है।

(iii) Ego - व्यक्ति का बाहरी व्यवहार Ego से ही निर्धारित होता है।

प्रायः Id तथा Super Ego में संघर्ष चलता है।

जो भी इच्छा है, उसे करो — नैतिक रूप से जो सही है उसे करो

→ इन दोनों के बीच जो समझौते का स्तर होता है वह Ego होता है जिसमें Id का प्रभाव ज्यादा होता है उसमें नैतिकता की तीव्रता कम होती है।

→ जिसमें Super Ego का प्रभाव ज्यादा होता है उसमें नैतिकता की तीव्रता ज्यादा होती है प्रायः जिन बच्चों की परवरिश अच्छी होती है उनका Super Ego अच्छा होगा और नैतिकता की तीव्रता ज्यादा होगी और वह नैतिक रूप से अच्छा होगा।

- **समाजिक प्रभाव :–** यदि कठोर समाज है तो वहां पर नैतिकता अधिक प्रभावशाली होगी (व्यवहार में)

→ यदि लचीला समाज है तो मन में होगा वही व्यवहार में होगा।

→ समाज में यदि सामाजिक व धार्मिक संस्थाएं अधिक शक्तिशाली है तो ऐसी स्थिति में नैतिक नियमों पर बल अधिक दिया जायेगा।

→ यदि राजनैतिक संस्थाएं ज्यादा Strong है तो नैतिक नियमों का पालन कम होगा।

→ संचार साधनों की भूमिका का भी नैतिकता पर प्रभाव पड़ता है यह मीडिया किस रूप में नैतिकता उपलब्ध करवाता है, पर निर्भर करता है।

- **नैतिकता के परिणाम :–**

नैतिकता को प्रायः सकारात्मक रूप में लिया जाता है और यह माना जाता है कि नैतिक नियम अच्छे होते है। और सामाजिक विकास में सहायक होते है। इसलिए हमें नैतिक नियमों को मानना ही चाहिए। लेकिन यह सत्य नहीं है नैतिक नियमों का परिणाम सकारात्मक व नकारात्मक दोनों तरह का हो सकता है। यह इस पर निर्भर करता है कि हमारे नैतिक नियम कैसे है।

→ यदि हमारे नैतिक नियम मध्यकालीन मान्यताओं पर आधारित हो तो उनके परिणाम नकारात्मक होंगे और यदि हमारे नैतिक नियम तार्किक हो तो इसके सकारात्मक परिणाम होंगे।

- **नैतिकता के सकारात्मक परिणाम :–**

→ यदि हमारे नैतिक नियम तार्किक हो तो ये हमारे समाज में अच्छी सामाजिक व्यवस्था को बनाते है। जिसमें साम्प्रदायिक सौहार्द, सहिष्णुता, प्रेम आदि मूल्यों को प्रोत्साहन मिलता है।

→ सभी लोगों को विकास के समान अवसर प्राप्त होते है।

→ आतंकवाद और विभिन्न आपराधिक गतिविधियां कम होगी।

→ सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा।

→ राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित होगा।

→ सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों को दूर किया जा सकेगा।

• **व्यक्तिगत लाभ :–** व्यक्ति की प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। इसकी साख और विश्वसनीयता में बढ़ोतरी होती है।

→ उसे सामाजिक सम्मान प्राप्त होता है।

→ इससे व्यक्ति को आत्म संतुष्टि मिलती है और व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है।

→ लोग उसका नेतृत्व स्वीकार करते है।

• **नकारात्मक परिणाम :–**

हमारी अधिकांश नैतिक मान्यताएं मध्यकालीन आदर्शों पर आधारित है और ये सामाजिक और धार्मिक विचारों पर अधिक निर्भर है। इनमें तार्किकता की कमी है। इसलिए दैनिक धारणाएं गलत भी हैं जैसे :– पर्दा प्रथा, अस्पृश्यता।

अतः इसके कारण समाज के कुछ वर्गों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

• नैतिक मूल्यों में वस्तुनिष्ठता का अभाव होता है उनमें आत्मनिष्ठता अधिक होती है और इस कारण प्रायः नैतिक मूल्यों में परिवर्तन होता रहता है। तथा दो अलग–अलग समाजों के नैतिक मूल्य भी अलग–अलग होते है और इससे आपसी टकराव की स्थिति बढ़ जाती है।

• नैतिकता पर ज्यादा बल देने से दो पीढ़ियों के बीच में टकराव उत्पन्न होता है।

• भारत जैसे देश में नैतिकता के नाम पर गैर महत्वपूर्ण मुद्दों पर अधिक बल दिया जाता है जैसे– कपड़े, खानपान, Sex etc.

• भारत में नीतिशास्त्र का पर्याप्त अध्ययन नहीं हुआ है इसलिए स्वतंत्र विषय के रूप में इसका विकास ही नहीं हुआ इसलिए हमारा नीतिशास्त्र धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं से ही अधिक प्रभावित है।

*** आर्थिक जीवन में नैतिकता के परिणाम :–**

प्रत्येक व्यक्ति ईमानदारी से अपना व्यवसाय करेगा। इससे उपभोक्ता व उद्यमियों दोनों को लाभ होगा अन्ततः लाभ ईमानदारी को ही मिलेगा।

1. अलीबाबा कंपनी
2. इससे भ्रष्टाचारा कम होगा
3. सरकारी योजनाओं का लाभ सभी को मिलेगा।
4. उद्यमी अधिनस्थों व श्रमिकों का शोषण नहीं करेगा।
5. इससे संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण होगा।
6. स्वावलंबन को प्रोत्साहन मिलेगा।
7. कर चोरी कम होगी जिससे सरकार के राजस्व में वृद्धि होगी व राज्य कल्याणकारी कार्य कर सकेगा।
8. मिलावट नहीं होगी जिससे स्वास्थ्य में सुधार होगा।

*** नकारात्मक प्रभाव :–**

1. वर्तमान युग मार्केटिंग का युग है और अपने उत्पाद को बेचने के लिए Marketing जरूरी है और इस आक्रामक मार्केटिंग के कारण बाजार का विकास हो रहा है। अतः हम Marketing (विपणन) के महत्व को नकार नहीं सकते है।

→ लेकिन नैतिक रूप से इसे उचित नहीं माना जाता है।

→ कोई भी व्यक्ति अपने उत्पाद की कमियों को नहीं बता सकता।

2. यदि एक व्यक्ति ईमानदारी से कर अदा करता है तथा उसका प्रतिद्वन्द्वी कर अदा नहीं करता है तो ईमानदार व्यक्ति को घाटा होगा और वह बाजार में पिछड़ जाएगा क्योंकि उसका उत्पाद महंगा हो जायेगा।

*** राजनीतिक प्रभाव :–**

→ भ्रष्टाचार में कमी होगी।

→ राजनीति का अपराधीकरण नहीं होगा।

→ राजनीति में साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद आदि नहीं होगा।

→ धन का दुरूपयोग नहीं होगा। चुनाव खर्चीले नहीं होंगे।

→ अच्छे मुद्दों पर चुनाव लड़ा जाएगा।

→ सरकार वोट बैंक की राजनीति की बजाय राष्ट्रीय हितों को महत्व देगी।

→ राजनीति में अच्छा नेतृत्व प्राप्त होगा क्योंकि योग्यता का सम्मान होगा।

→ विपक्ष सरकार के अच्छे कार्यों की प्रशंसा करेगा।

नीतिशास्त्र

नीतिशास्त्र वह आदर्शमूलक विज्ञान है जो समाज निवसित मनुष्यों के ऐच्छिक कार्यों का निष्पक्ष दृष्टि से मूल्यांकन कर इनके संदर्भ में उचितानुचित निर्णय प्रस्तुत कर आचरण मानवाचरण हेतु कुछ सार्वभौमिक नियमों की स्थापना करता है।

→ सुकरात का सद्‌गुण संबंधी मत :–

• **सद्‌गुण :–** सद्‌गुण मनुष्य की वे श्रेष्ठ स्थाई अभिवृतिया व संकल्प जो कि सदैव उसके आचरण से अभिव्यक्त होती है अर्थात् सदाचरण का आंतरिक पक्ष सद्‌संकल्प ही सद्‌गुण कहलाता है।

सुकरात ने सोफिस्टो के सापेक्षतावादी दर्शन के कारण नैतिकता के जो मानदण्ड समाप्त हो रहे थे उनके विरूद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप सद्‌गुण को अपने चिन्तन का मुख्य विषय बनाया।

सुकरात के अनुसार ज्ञान ही सद्‌गुण है क्योंकि यही हमारे आचरण को निर्धारित करता है जो व्यक्ति ज्ञानवान व विवेकशील होता है वह सद्‌गुणी होता है तथा जो व्यक्ति अज्ञानी होता है वह कभी सद्‌गुणी नहीं हो सकता है।

Psychology

* **बुद्धि** :–संज्ञानात्मक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि, संर्वेगात्मक बुद्धि, सांस्कृतिक बुद्धि और हार्वर्ड गार्डनर का विविध सिद्धांत।

* **व्यक्तित्व** :– मनोविश्लेषण सिद्धांत, शीलगुण के प्रकार सिद्धांत, व्यक्तित्व निर्धारण के कारक और व्यक्तित्व मापन की विधियां।

* **अधिगम और अभिप्रेरणा** :– अधिगम की शैलियां, स्मृति के मॉडल और विस्मृति के कारण, अभिप्रेरणा के वर्गीकरण व प्रकार, कार्य अभिप्रेरणा के सिद्धांत और अभिप्रेरणा का मापन।

• जीवन की चुनौतियों का सामना करना, दबाव, प्रकृति, प्रकार, कारण, लक्षण, प्रभाव, दबाव प्रबंधन और सकारात्मक स्वास्थ्य को प्रोत्साहन।

Books	**Writter**
Behaviourism	वाटसन
Principle Of Behaviour	क्लार्क हल
Field Theory Of Learning	कुर्ट लेविन
Motivation - Theory and Research	कोफर तथा एपल
Emotional Intelligence why it can Matter moe than IQ	डनियल गोलमेन
Working with emotional intelligence	डेनियल गोलमेन

Springboard ACADEMY

Intelligence :-

बुद्धि :– किसी व्यक्ति द्वारा अपने परिवेश को समझने की क्षमता विवेकपूर्ण चिंतन करने की क्षमता एवं जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता, बुद्धि है।

* आक्सफोर्ड शब्द कोश ने बुद्धि को प्रत्यक्षण करने (Perceiving), सीखने (Learning), समझने (Understanding) और जानने (Knowing) की योग्यता के रूप में परिभाषित किया है।

* अल्फ्रेड बिने बुद्धि पर शोध करने वाले पहले मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने बुद्धि को अच्छा निर्णय लेने की योग्यता अच्छा बोध करने की योग्यता अच्छा तर्क प्रस्तुत करने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया।

* वेश्लर के अनुसार बुद्धि व्यक्ति की वह समग्र क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति सविवेक चिंतन करने, सोद्देश्य व्यवहार करने तथा अपने पर्यायवरण से प्रभावी रूप से निपटने में समर्थ होता है।

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{कालानुक्रमिक आयु}} \times 100$$

* स्पीयरमैन ने 1927 में बुद्धि का द्विकारक सिद्धांत दिया।

(i) G- Factor (सामान्य कारक) :– वे मानसिक क्रियाएं जो प्राथमिक है और उनका प्रभाव सभी प्रकार के कार्यों के निष्पादन पर पड़ता है।

(ii) S- Factor (विशिष्ट कारक) :- विशिष्ट क्षेत्र में विशिष्ट योग्यता से है। श्रेष्ठ गायक (लता), खिलाड़ी (सचिन), वैज्ञानिक (आइंसटीन) आदि।

बुद्धि लब्धि वर्ग	वर्णनात्मक वर्गनाम	जनसंख्या प्रतिशत
130 से अधिक	अतिश्रेष्ठ (Very Superior)	2.2%
120–130	श्रेष्ठ (Superior)	6.7%
110–119	उच्च औसत (High Average)	16.1%
90–108	औसत (Average)	50%
80–89	निम्न औसत (Low Average)	16.1%
70–79	सीमावर्ती	6.7%
70 से कम	बौद्धिक रूप से असक्त	2.2%

1. **संज्ञानात्मक बुद्धि (Cognitive Intelligence) :–** संदर्भ के प्रति संवेदनशीलता, समझ, विभेदन क्षमता, समस्या समाधान की योग्यता तथा प्रभावी संप्रेषण की योग्यता संज्ञानात्मक बुद्धि है। मूर्तबुद्धि जिसका संबंध यंत्रों व मशीनों से है जो अनुभव पर आधारित है। अमूर्त बुद्धि संप्रत्यय आधारित है जो गणितीय समस्याओं को हल करने, साहित्यिक रचना की योग्यता है।

2. सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence) :– सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान, अपने से बड़ों, छोटों तथा वंचितों के प्रति प्रतिबद्धता दूसरों की चिंता, दूसरे व्यक्तियों के परिपेक्ष्य का सम्मान करने की योग्यता समाजिक बुद्धि है। संबंधों में समस्या आने पर संबंध समाप्ति के स्थान पर सकारात्मक समाधान योजना, किसी व्यक्ति को उसके कार्यों का उचित फीडबैक देना, अनधिकार चेष्टा नहीं करना, संबंधों में घनिष्ठता न होने पर भी कार्यात्मक संबंध बनाए रखना, समूह में कार्य करने की क्षमता सामाजिक बुद्धि है।

3. संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) :– सांवेगिक बुद्धि के सम्प्रत्यय को सर्वप्रथम से लोवी तथा मेयर ने प्रस्तुत किया। 1997 में उनके द्वारा What is Emotional Intelligence पुस्तक लिखी।

$$EQ = \frac{\text{भावनात्मक स्थिरता (Emotional Stability)}}{\text{मानसिक आयु (Mental Age)}} \times 100$$

डेमियल गोलमेन ने अपनी पुस्तक Emotional Intelligence; Why It can matter more than IQ में EI पांच क्षमताओं का समूह बताया।

1. स्वजागरूकता (Self Awareness)
2. आत्मनियमन (Self Regulation)
3. आत्म अभिप्रेरण (Self Motivation)
4. समानुभूति (Empathy)
5. सामाजिक दक्षता (Social Skill)

भावनात्मक बुद्धिमान व्यक्तियों की विशेषताएं

1. अपनी भावनाओं और संवेगों को जानना और उसके प्रति संवेदनशील होना।

2. दूसरे व्यक्तियों के विभिन्न संवेगों को उनकी शरीर भाषा, आवाज एवं स्वरक तथा आनन (मुख्य) अभिव्यक्तियों पर ध्यान देते हुए जानना और उनके प्रति संवेदनशील होना।

3. अपने संवेगों को अपने विचारों से संबंध करना ताकि समस्या समाधान तथा निर्णय करते समय उन्हें ध्यान में रखा जा सके।

4. अपने संवेगों की प्रकृति एवं तीव्रता के शक्तिशाली प्रभाव को समझना।

5. अपने संवेगों और उनकी अभिव्यक्तियों को दूसरों से व्यवहार करते समय नियंत्रित करना ताकि शांति और सामंजस्य की प्राप्ति हो सके।

4. सांस्कृतिक बुद्धि :– सांस्कृतिक प्राचलों (रीतिरिवाजों, विश्वासों, अभिवृतियों, कला, साहित्य, भाषा में उपलब्धियों) के अनुरूप किसी व्यक्ति की बुद्धि का टलना, सांस्कृतिक बुद्धि है।

स्टर्न बर्ग के अनुसार बुद्धि संस्कृति का उत्पाद होती है।

वाइगॉटर के अनुसार कुछ प्रारंभिक मानसिक प्रक्रियाएं (जैसे – रोना, माता की आवाज की ओर ध्यान देना, सूंघना, चलना, दौड़ना आदि।) सर्वव्यापी होती है। परंतु उच्च मानसिक प्रक्रियाएं जैसे – समस्या का समाधान करने तथा चिंतन करने आदि की शैलियां मुख्यतः संस्कृति का प्रतिफल होती है।

तकनीकी रूप से विकसित समाज के व्यक्ति ऐसी बालपोषण रीतियां अपनाते है जिससे बच्चों में सामान्यीकरण व अमूर्तिकरण करने की क्षमता विकसित हो सके। ऐसे समाजों में व्यक्ति प्रेक्षण करने, विश्लेषण करने, अच्छा निष्पादन करने, तेजकाम करने तथा उपलब्धि की ओर उन्मुख रहने आदि कौशलों में दक्ष होते है।

Springboard ACADEMY

गैर पश्चिमी संस्कृतियों में व्यक्ति की अपनी संज्ञानात्मक सक्षमता के साथ साथ उसमें समाज के दूसरे व्यक्तियों के साथ सामाजिक संबंधों को बनाने के कौशल को भी बुद्धि का लक्षण माना जाता है। गैर पश्चिमी समाजों में समाज के केन्द्रित तथा सामूहिक उन्मुखता पर बल दिया जाता है जबकि पश्चिमी समाजों में निजी उपलब्धियों तथा व्यक्तिपरक उन्मुखता पर अधिक बल दिया जाता है।

भारतीय संदर्भ में समाज एवं संपूर्ण वैश्विक पर्यावरण से व्यक्ति के संबंधों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। वसुधेव कुटुम्बकम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः आदि भारतीय संस्कृति का हिस्सा है।

5. हार्वड गार्डनर का विविध बुद्धि सिद्धांत :–

हार्वड गार्डनर के अनुसार बुद्धि कोई एक तत्व नहीं है बल्कि कई भिन्न–भिन्न प्रकार की बुद्धियों का अस्तित्व होता है। प्रत्येक बुद्धि एक दूसरे से स्वतंत्र रहकर कार्य करती है। गार्डनर के अनुसार किसी समस्या का समाधान खोजने के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की बुद्धियां आपस में अंतःक्रिया करते हुए साथ–साथ कार्य करती हैं। अपने–अपने क्षेत्रों में असाधारण योग्यताओं का प्रदर्शन करने वाले अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्तियों का गार्डनर ने अध्ययन किया और इसके आधार पर आठ प्रकार की बुद्धि का वर्णन किया।

1. भाषागत (Linguistic) :– (भाषा के उत्पादन और उपयोग के कौशल) यह अपने विचारों को प्रकट करने तथा दूसरे व्यक्तियों के विचारों को समझने हेतु प्रवाह एवं नम्यता के साथ भाषा का उपयोग करने की क्षमता है। जिन व्यक्तियों में यह बुद्धि अधिक होती है वे ''शब्द कुशल'' होते है। ऐसे व्यक्ति शब्दों के भिन्न भिन्न अर्थों के प्रति संवेदनशील होते है, अपने मन में भाषा के बिम्बों का निर्माण कर सकते है और स्पष्ट तथा परिशुद्ध भाषा का उपयोग करते है। लेखकों, कवियों, वक्ताओं में यह बुद्धि अधिक मात्रा में होती है।

2. तार्किक :– गणितीय (Logical and Mathematical) – (वैज्ञानिक चिंतन एवं समस्या समाधान के कौशल) – इस प्रकार की बुद्धि अधिक मात्रा में रखने वाले व्यक्ति तार्किक एवं आलोचनात्मक चिंतन कर सकते है। अमूर्तिकरण एवं जटिल गणितीय समस्याओं के हल हेतु प्रतीकों का प्रहस्तन अच्छी प्रकार से कर लेते हैं। वैज्ञानिकों, गणितज्ञों एवं नोबेल पुरस्कार विजेताओं में इस प्रकार की बुद्धि अधिक पाई जाती है।

3. देशिक (Spatial) :– (दृश्य बिंब तथा प्रतिरूप निर्माण के कौशल)

यह मानसिक बिम्बों को बनाने, उनका उपयोग करने तथा उनमें मानसिक धरातल पर परिभार्जन करने की योग्यता है। विमानचालक, नाविक मूर्तिकार, चित्रकार, वास्तुकार, आंतरिक साज सज्जा के विशेषज्ञ, शल्य चिकित्सक आदि में इस बुद्धि के अधिक पाए जाने की संभावना होती है।

4. संगीतात्मक (Musical) :– (सांगीतिकलय तथा अभिरचनाओं के प्रति संवेदनशील)

इस बुद्धि की उच्च मात्रा रखने वालों में ध्वनियों और स्पंदनों तथा ध्वनियों की नई अभिरचनाओं के सर्जन के प्रति संवेदनशील होते है। ऐसे लोगों में अच्छे संगीत की परख एवं अच्छे संगीत के निर्माण की योग्यता होती है।

5. शारीरिक गतिसंवेदी (Bodity Kinaesthetic) :– (संपूर्ण शरीर अथवा उसके किसी अंग को लोंच का उपयोग करना तथा उसमें सर्जनात्मकता प्रदर्शित करना) – किसी वस्तु अथवा उत्पाद के निर्माण के लिए अथवा मात्र शारीरिक प्रदर्शन के लिए संपूर्ण शरीर अथवा उसके किसी एक भाग की लोच तथा पेशीय कौशल की योग्यता शारीरिक गतिसंवेदी योग्यता कहलाती हैं। धावकों, नृतकों, अभिनेताओं, अभिनेत्रियों, खिलाड़ियों, जिमनास्टों, मार्शल आर्टिस्टों में इस बुद्धि की अधिकता होती है।

6. अंतवैयक्तिक (Inter Personal) :– (दूसरे व्यक्तियों के सूक्ष्म व्यवहारों के प्रति संवेदनशीलता) – इस योग्यता द्वारा व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की अभिप्रेरणाओं या उद्देश्य, भावनाओं तथा व्यवहारों का सही बोध करते हुए उनके साथ मधुर संबंध स्थापित करता है। मनोवैज्ञानिक, परामर्शद्, राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा धार्मिक नेता आदि में उच्च अन्तवैयक्तिक बुद्धि पाए जाने की संभावना होती है।